यह व्याकुलता सभी प्राणियों के हार्दिक आकर्षण की व्याख्या करती है |3 नीड़ों से बच्चों का झाँकना अत्यंत मर्मस्पर्शी चित्रण है |

**शिल्प सौंदर्य** -1 जल्दी-जल्दी में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है | 2 "जल्दी -जल्दी " में "ई " की आवृत्ति होने से स्वरमैत्री है |3 अभिव्यक्ति की सरलता मनभावन है |

**मुझसे मिलने को कौन ---------- दिन जल्दी-जल्दी ढलता है |**

**भाव सौंदर्य** - 1 कवि की हार्दिक निराशा , उदासी और उससे उत्पन्न व्यर्थ होने का बोध प्रकट हुआ है | यह उदासी पाठकों के मर्म को छूने में सक्षम है |

**शिल्प सौंदर्य** -1 "कौन " और "किसके " प्रश्न वाचकों के कारण प्रेम का अभाव साकार हो उठा है | इस में प्रश्न अलंकार है |

---

**आलोक धन्वा - पतंग**

**सबसे तेज़ बौछारें ----------इतनी नाज़ुक दुनिया |**

**भाव सौंदर्य** -1 प्रकृति का मानवीकरण बहुत मनोरम बन पड़ा है जैसे भादों गया , शरद आया , पुलों को पार करते हुए |2 प्रातः-काल की तुलना खरगोश की लाल आँखों से की गई है |

**शिल्प -सौंदर्य** -1 इस काव्यांश में दृश्य बिम्ब , श्रव्य बिम्ब और स्पर्श बिम्ब का प्रयोग दर्शनीय है -

**दृश्य बिम्ब** - खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा , शरद आया पुलों को पार करते हुए , चमकीले इशारों से बुलाते हुए |

**श्रव्य बिम्ब** - घंटी बजाते हुए जोर-जोर से , शुरू हो सके सीटियों , किलकारियों और |

**स्पर्श बिम्ब** - आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए |

2 शरद ऋतु का मानवीकरण करने के कारण मानवीकरण अलंकार है |

**जन्म से ही वे ----------एक धागे के सहारे |**

**भाव सौंदर्य** -1 इस काव्यांश में पतंग उड़ाते बच्चों की बेसुध मस्ती साकार हो उठती है | उनकी लयात्मक गति , झूलता हुआ शरीर , लचीला वेग , रोमांचित शरीर , पतंग उड़ाते बच्चों की तरंग का प्रकट करने में पूरी तरह से समर्थ है |2 " कपास " का प्रयोग विशिष्ट है | यह बच्चों के शरीर की दुर्लभ लोच , नरमी सहनशीलता और कष्ट रोधी शक्ति की ओर संकेत करता है |

**शिल्प सौंदर्य** - 1 बहुत ही सुन्दर और सूक्ष्म उपमाओं का प्रयोग किया गया है | जैसे - दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए , वे पेंग भरते हुए से चले जाते हैं , डाल की तरह लचीली वेग से आदि |2 काव्य की भाषा में किसी प्रकार की शाब्दिक बनावट या कृत्रिमता नहीं है यही कारण है कि अनुप्रास जैसे अलंकार हैं ही नहीं | भाषा निर्झर के समान सहज रूप से गतिशील है |3 इस में तत्सम , उर्दू तथा तद्भव शब्दों का मिला - जुला प्रयोग हुआ है जैसे - तत्सम- पृथ्वी , दिशा , मृदंग , रोमांचित और संगीत |उर्दू - नरम , अक्सर , खतरनाक , सिर्फ , महज़ आदि |4 इस काव्यांश में दृश्य बिम्ब , श्रव्य बिम्ब और स्पर्श बिम्ब का प्रयोग दर्शनीय है -

**दृश्य बिम्ब** - पृथ्वी घूमती हुई आती है , छतों के खतरनाक किनारों तक |

**श्रव्य बिम्ब** - दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए |

**स्पर्श बिम्ब** - छतों को भी नरम बनाते हुए |

**पतंगों के साथ-साथ ----------उनके बेचैन पैरों के पास |**

**भाव सौंदर्य** - 1 यह काव्यांश लाक्षणिक भाषा के कारण अत्यंत मनोरम बन पड़ा है | बच्चों का पतंग़ के साथ-साथ उड़ना लाक्षणिक प्रयोग है | इसका अर्थ है अत्यंत उमंग और मस्ती में जीना | 2 "सुनहले सूरज के सामने आने" का लाक्षणिक अर्थ है जीवन के सबसे ज्योतिर्मय अनुभव से भी आगे बढ़ने का उत्साह दिखाना | 3 बेचैन पैर का लाक्षणिक अर्थ है - हमेशा हलचल और नई गतिविधियों में संलग्न बच्चे | 4 रंध्र का लाक्षणिक अर्थ है मन में उठती हुई तरंग , उमंग और उच्च आकांक्षा की अनुभूति |

**शिल्प सौंदर्य** - 1 मानवीकरण अलंकार के कारण काव्यांश में सजीवता आ गई है | पृथ्वी का तेज़ घूमते हुए बच्चों के पास आना मानवीकरण का उदाहरण है | 2 "साथ-साथ " में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है | संस्कृत तथा उर्दू शब्दों का प्रयोग मनोरम बन पड़ा है | 3 सुनहले सूरज में अनुप्रास का सौंदर्य है | भाषा मुक्त निर्झर के समान प्रवाहमान है | कवि ने लय , तुक , मात्रा आदि के स्थान पर लाक्षणिक प्रयोगों और बिम्बों से प्रभाव उत्पन्न किया है | 4 दृश्य बिम्ब - छतों के खतरनाक किनारे , पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है , उनके बेचैन पैरों के पास|

## कुँवर नारायण - कविता के बहाने

**कविता एक उडान है ----------चिड़िया क्या जाने ? (महत्त्वपूर्ण)**

**भाव सौंदर्य** -1 इस काव्यांश में चिड़िया और कविता की तुलना की आ गई है | कविता की उडान को चिड़िया की उडान की तुलना से अधिक प्रभावी और सशक्त बताया गया है | 2 कवि ने चिड़िया की लाचारी और बेचारगी दिखलाकर कवित की उडान की महिमा गाई है | कवि कविता के पंख लगाकर मानव-जीवन के भीतर प्रवेश करता है | 2 "कविता की उडान भला चिड़िया क्या जाने " में काकु वक्रोक्ति है | इस में चिड़िया की सीमितता को दिखाया गया है |

**शिल्प सौंदर्य** -1 " चिड़िया क्या जाने ?" में प्रश्न अलंकार है | इस में मानवीकरण का पुट भी है | चिड़िया से मानव की तरह ज्ञान की अपेक्षा की गई है | 2 यह कविता न तो गेय है , न छंद बद्ध है | इस में तुकांतता और भाव की लय का अनूठा योग है | बहाने , जाने , माने की तुक से कविता में प्रभाव आ गया है | 3 भाषा अत्यंत सरल व प्रभावशाली है | कविता का मानवीकरण किया गया है | कविता के पंख लगाने में रूपक अलंकार है | 4 "बाहर-भीतर" , "इस घर -उस घर" में "र " की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है | 5 इस में "चिड़िया की उड़ान " को कविता की उड़ान के सामने सीमित बताया गया है अतः व्यतिरेक अलंकार है | "चिड़िया क्या जाने " में जो सीमितता दिखाई गई है , वह अत्यंत मनोरम है | कविता अरूप है , काल्पनिक है , चिड़िया प्रत्यक्ष है , साकार है , अतः इन दोनों की तुलना मनोरम बन पड़ी है |

**कविता एक खिलना ---------- फूल क्या जाने ? (महत्त्वपूर्ण)**

**भाव सौंदर्य** -1 कविता और फूल की तुलना बहुत मनोरम बन पड़ी है | कविता की तुलना में फूल कितना बेचारा है , ससीम है | कविता अनंत है , यह दिखाने में कवि पूर्णतः सफल है | 2 "कविता का खिलना भला फूल क्या जाने ?" इस में फूल की सीमितता दिखाई गई है | **शिल्प सौंदर्य** -1 "फूल क्या जाने " में प्रश्न अलंकार है | इस में मानवीकरण अलंकार है | फूलों से मानव की तरह ज्ञान की अपेक्षा की है | 2 यह कविता न यह कविता न तो गेय है , न छंद बद्ध है | इस में तुकांतता और भाव की लय का अनूठा योग है | बहाने ,

जाने , माने की तुक से कविता में प्रभाव आ गया है |3 भाषा अत्यंत सरल व प्रभावशाली है | कविता का मानवीकरण किया गया है | कविता के पंख लगाने में रूपक अलंकार है |4 "बाहर-भीतर" , "इस घर -उस घर" में "र " की आवृत्ति से व "कविता का खिलना भला फूल क्या जाने " में "ल " की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है |

**कविता का खेल ---------- बच्चा ही जाने |**

**भाव सौंदर्य** -1 इस काव्यांश में बच्चों में पाई जाने वाली स्वाभाविक आत्मीयता , अभेदता और निश्छलता का सम्मान किया गया है | कवि ने बच्चों की क्रीडा और कवि की क्रीडा दोनों को समान रूप से सम्मान दिया है | दोनों अपने -पराये का भेद भूलकर आनद करते हैं |

**शिल्प- सौंदर्य** -1 "सब घर एक करना " में भेदभाव भूलकर समानता का अनुभव दिखाया गया है |2 "बच्चों के बहाने" में अनुप्रास अलंकार है |

**कविता - बात सीधी थी पर**

**बात सीधी थी पर---------- पेचीदा होती चली गई |**

**भाव सौंदर्य** - 1 भाषा में जटिलता , घुमाव- फिराव , अलंकार सौंदर्य आदि के व्यर्थ प्रयोग के कारण मूल बात ही अकथित रह गई | मूल सन्देश शब्दों के बीच में उलझकर रह गया | भाषा का जंजाल खड़ा हो गया किन्तु अर्थ छूट गया |2 सहज बात को सरल शब्दों में कह देने से बात अधिक प्रभावी ढंग से संप्रेषित होती है | अधिक जटिलता या भाषा -सौन्दर्य अर्थ की अभिव्यक्ति में बाधा ही डालता है |

**शिल्प -सौदर्य** -1 कवि ने कथ्य के अनुरूप अत्यंत सरल , सरस शब्दों का प्रयोग किया है | यह कविता पद्य होते हुए भी गद्य के समान है | यह एक विचारात्मक कविता है , जिसे हम लयात्मक गद्य कविता कह सकते हैं |2 कवि ने भाषा की जटिलता और बनावटीपन पर कटाक्ष करने के लिए उल्टा-पुल्टा , तोडा -मरोड़ा , घुमाया -फिराया जैसे शब्दों का सार्थक प्रयोग किया है | इन शब्दों में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है |3 "भाषा का चक्कर" , " टेढ़ी फँसी" जैसे लोक -प्रचलित प्रयोगों के कारण अभिव्यक्ति सुन्दर बन पड़ी है |4 "साथ-साथ " में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है |

**सारी मुश्किल को ----------शाबाशी और वाह वाह | (महत्त्वपूर्ण)**

**भाव -सौदर्य** 1 "तमाशबीन" में छिपा व्यंग्य बहुत दूर तक मार करने में सक्षम हैं | प्रायः दर्शक , श्रोता और प्रशंसक अपनी अकारण शाबाशी से कवि को भ्रमित कर देते हैं , तब कवि भी पाठकों के वाहवाही लूटने के लोभ में अपनी वाणी को जटिल बनाता चला जाता है |2 "करतब" शब्द भी व्यंग्यपूर्ण है | जान-बूझकर भाषा को कठिन करना कोई साधना नहीं "करतब" ही हो सकता है |

**शिल्प -सौदर्य** -1 कवि ने पेच कसने के बिम्ब द्वारा अपनी बात स्पष्ट की है | इससे कथ्य सजीव और प्रभावी बन पड़ा है | दृश्य बिम्ब - उसे बेतरह कसता चला जा रहा था | रूपकातिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है |2 "बेतरह " विशेषण बहुत सुन्दर बन पड़ा है | इस में अतार्किक होकर बात कहने का भाव निहित है | 3 इस काव्यांश की भाषा को लोक-प्रचलित हिंदी कह सकते हैं | मुश्किल , करतब , साफ़ , तमाशबीन , शाबाशी उर्दू शब्द हैं | "धैर्य " संस्कृत शब्द है | 4 कवि ने कथ्य के अनुरूप अत्यंत सरल , सरस शब्दों का प्रयोग किया है | यह कविता पद्य होते हुए भी गद्य के समान है | यह एक विचारात्मक कविता है , जिसे हम लयात्मक गद्य कविता कह सकते हैं |

**आखिरकार वही हुआ ----------बरतना कभी नहीं सीखा | (महत्त्वपूर्ण)**

**भाव -सौंदर्य** -1 "बात की चूड़ी मर जाने का आशय है - जबरदस्ती का शब्द-जाल फैलाना | "बेकार घूमने " का आशय है बेमतलब की बात | व्यर्थ का शब्द-जाल | 2 बड़े-बड़े शब्दों के प्रयोग से डराने के लिए "कील की तरह ठोंकना " उपमान बहुत सुन्दर और सार्थक बन पड़ा है | एक विस्तृत और गहरी बात पूरी तरह कही नहीं जाती | वह शब्दों की पकड़ से दूर होती है इसके लिए शरारती बच्चे का उपमान बहुत मनोरम बन पड़ा है | 3 भाषा को आसानी , सरलता और स्वाभाविकता से प्रयोग में लाना चाहिए |

**शिल्प -सौंदर्य** -1 कवि ने पेच कसने के बिम्ब द्वारा अपनी बात स्पष्ट की है | इससे कथ्य सजीव और प्रभावी बन पड़ा है | दृश्य बिम्ब - उसे बेतरह कसता चला जा रहा था | रूपकातिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है | 2 "कील की तरह ठोंकना " भाषा का जबरदस्ती जटिल बनाने का परिचायक है | 3 बात का मानवीकरण बहुत सुन्दर और प्रभावी बन पड़ा है | 4 "कवि का पसीना पोंछना " बहुत सुन्दर बिम्ब है , जो परिश्रम की व्यर्थता का सूचक है | 5 "कील की तरह " और "शरारती बच्चे की तरह " में उपमा अलंकार है | 6 " जोर-जबरदस्ती " और "पसीना पोंछते " में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है | 7 कवि ने कथ्य के अनुरूप अत्यंत सरल , सरस शब्दों का प्रयोग किया है | यह कविता पद्य होते हुए भी गद्य के समान है | यह एक विचारात्मक कविता है , जिसे हम लयात्मक गद्य कविता कह सकते हैं |

## रघुवीर सहाय - कैमरे में बंद अपाहिज

**हम दूरदर्शन पर ---------- बता नहीं पाएगा |**

**भाव-सौंदर्य** -1 इस काव्यांश में दूरदर्शन के कार्यक्रम संचालकों की कार्य-शैली पर गहर व्यंग्य किया गया है | वे अपने कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के चक्कर में अपाहिजों और दुर्बलों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते हैं | उस से बेतुके सवाल पूछते हैं तथा उनकी संवेदनाओं को कुचलते हैं | 2 समर्थ शक्तिवान लोग दूरदर्शन के स्वामी हैं वे दुर्बलों की पीडाओं को आम जनता के सामने रखकर अपने कार्यक्रम को रोमांचक बनाना चाहते हैं ताकि वे इनके माध्यम से पैसा कमा सकें |

**शिल्प -सौंदर्य** -1 इसमें मीडियाकर्मियों की हृदयहीन कार्य-शैली पर प्रकाश डाला गया है | 2 कविता की शैली नाटकीय और भाषा अत्यंत सरल है |

**सोचिए बताइए ----------पड़ने का करते हैं | (महत्त्वपूर्ण)**

**शिल्प -सौंदर्य** -1 इस काव्यांश में नाटकीय शैली का प्रयोग किया गया है | कार्यक्रम संचालक कभी अपाहिज़ से तो कभी दर्शकों से बातचीत करके कथ्य को रोचक बनाता है | 2 इस में कोष्ठकों में अंकित वाक्यों का प्रयोग कवि का एक नया प्रयोग है | 3 इसमें मीडियाकर्मियों की हृदयहीन कार्य-शैली पर प्रकाश डाला गया है |

**फिर हम परदे पर ----------धन्यवाद |**

**भाव-सौंदर्य** -1 संचालक परदे पर अपाहिज़ की फूली हुई आँख दिखाकर उनके दर्द को बढा-चढ़ा कर लोगों के सामने लाकर कार्य को प्रभावी बनाने की कोशिश करता है | उसे अपाहिजों के दुःख-दर्द से कोई लेना-देना नहीं है | वह उनके दुःख से द्रवित होने की बजाय मुस्कुराता है उसे इस बात की खुश है कि उसका उद्देश्य कुछ सीमा तक सफल रहा |

**शिल्प -सौंदर्य** -1 इसमें मीडियाकर्मियों की हृदयहीन कार्य-शैली पर प्रकाश डाला गया है | 2 इस में कोष्ठकों में अंकित वाक्यों का प्रयोग कवि का एक नया प्रयोग है | 3 इस काव्यांश में दूरदर्शन के सामाजिक कार्यक्रमों की पोल खोली गई है | वे समस्या को खोल कर दिखाने के चक्कर में बहुत निर्दयी हो जाते हैं |